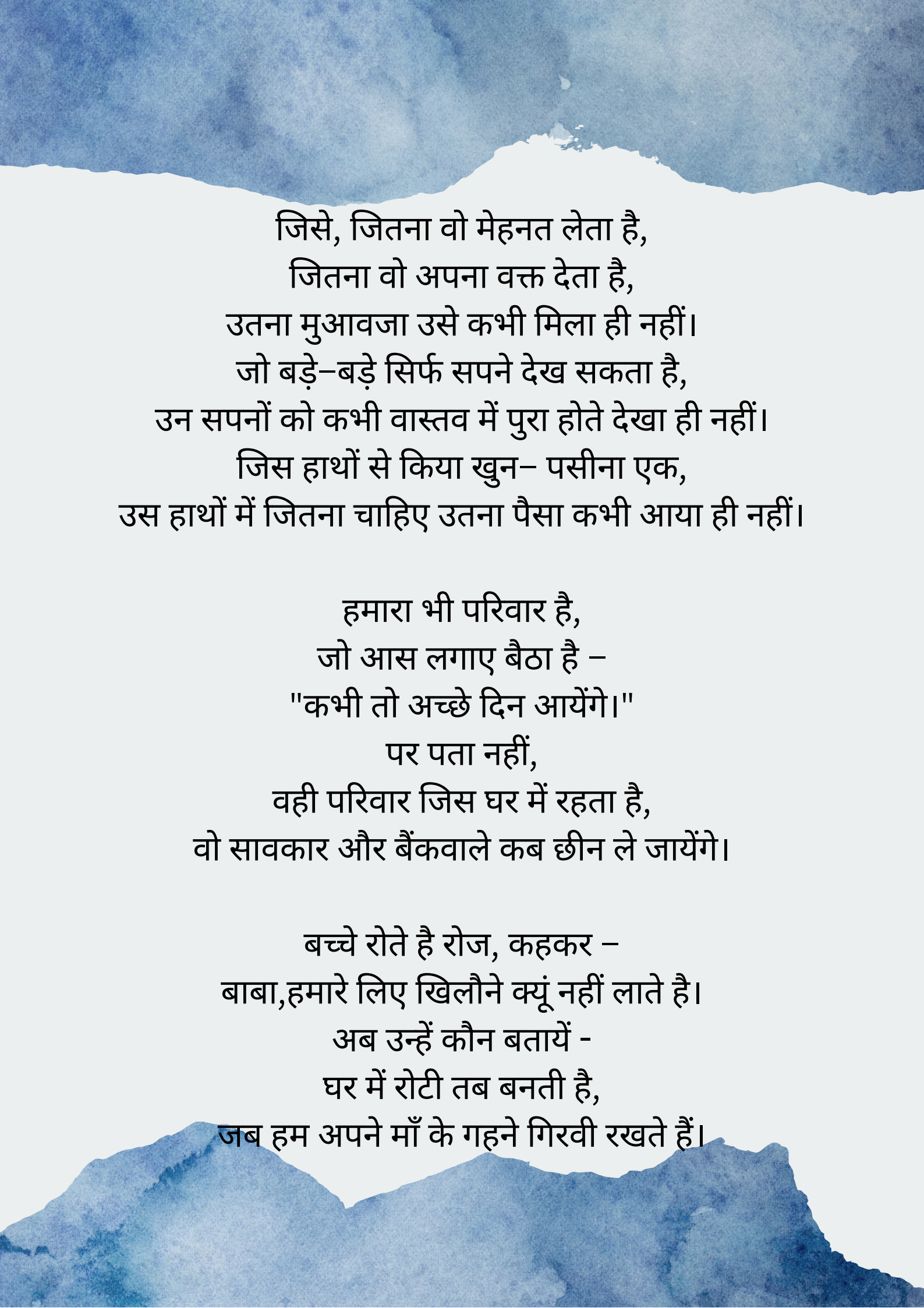


# The poet inside the farmer who might commit suicide

हो अगर दो पल वक्त आपके पास,  
तुम्हें मैं अपनी दास्तान सुना दूँ।  
जाते जाते इस दुनिया से,  
दो शब्द मेरी रूठी जिंदगी के बारे में लिख लूँ।  
खेती में काम कर, पसीना बहाने के अलावा,  
खुदकुशी के आँसु बहा लूँ।

क्यों खुदकुशी का नाम सुन कर  
अब ध्यान मेरी तरफ आ गया ना?  
"तो सुनो मेरी कहानी!"

मैं हूँ एक नियती और प्रकृति से हारा हुआ,  
चारों तरफ से मुसीबतों के बवंडर में फसा हुआ,  
चार साल से कर्जों में डुबा हुआ,  
एक लाचार किसान !!



जिसे, जितना वो मेहनत लेता है,  
जितना वो अपना वक्त देता है,  
उतना मुआवजा उसे कभी मिला ही नहीं।  
जो बड़े-बड़े सिर्फ सपने देख सकता है,  
उन सपनों को कभी वास्तव में पुरा होते देखा ही नहीं।  
जिस हाथों से किया खुन- पसीना एक,  
उस हाथों में जितना चाहिए उतना पैसा कभी आया ही नहीं।

हमारा भी परिवार है,  
जो आस लगाए बैठा है –  
"कभी तो अच्छे दिन आयेंगे।"  
पर पता नहीं,  
वही परिवार जिस घर में रहता है,  
वो सावकार और बैंकवाले कब छीन ले जायेंगे।

बच्चे रोते हैं रोज, कहकर –  
बाबा, हमारे लिए खिलौने क्यों नहीं लाते है।  
अब उन्हें कौन बतायें –  
घर में रोटी तब बनती है,  
जब हम अपने माँ के गहने गिरवी रखते हैं।

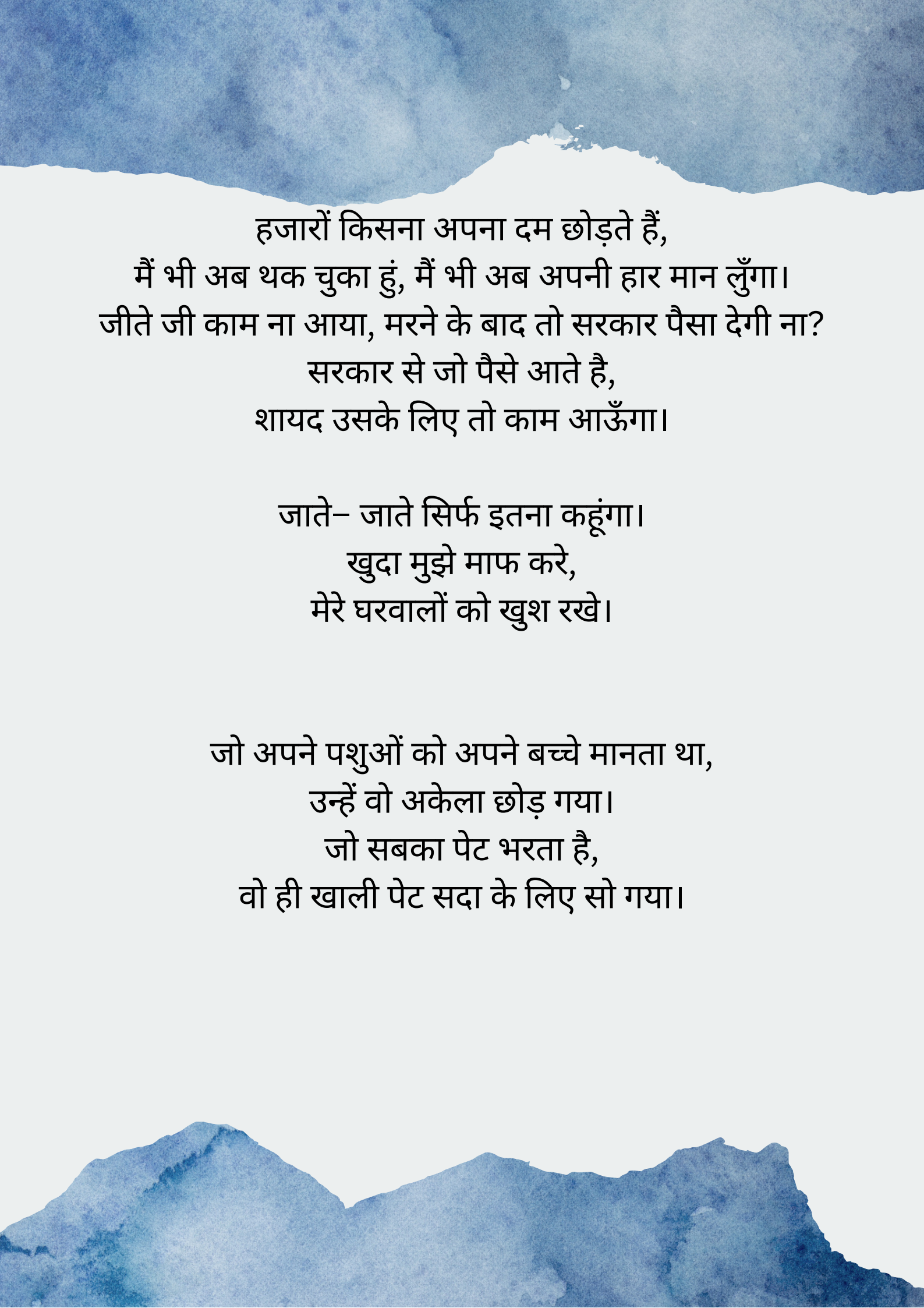


इन सब मुसीबतों की जड़ है—  
की नियती और प्रकृति हमारा साथ नहीं देती।  
वरना हमारा रवय्या किसी अफसर के कम ना होता,  
वरना हमारी शान-शौकत किसी राजा से कम ना होती।

घर जाता हुं तो बीवी बच्चे देखे नहीं जाते,  
बाहर घुमता हुं, तो लोग पैसे माँगकर परेशान करते हैं।  
दोस्तों में भी अब पहले जैसी इज्जत ना बची,  
अकेला बैठता हुं तो,  
बुरे खयाल तो जैसे काटने को दौड़ते है।

खैर, जाने दो!  
तुम नहीं समझ पाओगे दर्द मेरा,  
तुम तो 20 की सब्जी 10 को माँगते हो।  
पुरा साल हमें नजरंदाज करके,  
"जय जवान, जय किसान" के नारे सिर्फ एक दिन के लिए लगाते हो।

"जय! कहाँ जय?"  
सारे पराजयों से भागकर तो यहां आया हुं।  
अब खेती-धरती तो मेरी माँ है,  
पैसों के लिए मैं उसे तो बेच नहीं सकता,  
तो कोई रास्ता बचा नहीं,  
इसलिए एक मजबूत रस्सी लटकने के लिए लाया हुं।



हजारों किसना अपना दम छोड़ते हैं,  
मैं भी अब थक चुका हूँ, मैं भी अब अपनी हार मान लूँगा।  
जीते जी काम ना आया, मरने के बाद तो सरकार पैसा देगी ना?  
सरकार से जो पैसे आते हैं,  
शायद उसके लिए तो काम आऊँगा।

जाते- जाते सिर्फ इतना कहूँगा।  
खुदा मुझे माफ़ करे,  
मेरे घरवालों को खुश रखे।

जो अपने पशुओं को अपने बच्चे मानता था,  
उन्हें वो अकेला छोड़ गया।  
जो सबका पेट भरता है,  
वो ही खाली पेट सदा के लिए सो गया।